से भी सूक्ष्म, सर्वपालक, जगत् से परे अचिन्त्य पुरुष हैं। वे सूर्य के समान तेजोमय और दिव्यस्वरूप हैं—इस भौतिक प्रकृति से परे हैं।।९।।

तात्पर्य

यहाँ अनन्य भगवच्चिन्तन करने की पद्धति का प्रतिपादन है। सर्वप्रथम यह स्मरणीय है कि परमेश्वर निर्विशेष अथवा शून्य नहीं है। निर्विशेष अथवा शून्य वस्तु कभी ध्यान का विषय नहीं हो सकती। निर्विशेष अथवा शून्य का ध्यान करना बहुत कठिन होगा। परन्तु श्रीकृष्ण का स्मरण अतिशय सुगम है, जैसा इस श्लोक में स्पष्ट कहा है। इसलिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि भगवान् राम-कृष्ण आदि रूपों में दिव्य पुरुष हैं। उन्हें **कविम्** कहा गया है, जिसका अर्थ है कि वे त्रिकालज्ञ हैं। सबके आदि होने के कारण **पुराण** हैं; प्रत्येक वस्तु का उद्भव उन से हुआ है। वे ब्रह्माण्ड के परम नियन्ता हैं और मानवता के परिपालक तथा उपदेष्टा भी हैं। वे अणु से भी सूक्ष्मतर हैं। जीवात्मा केश की नोक के १०,०००वें भाग के बराबर है, परन्तु प्रभु की सूक्ष्मता इतनी अचिन्त्य है कि वे इस जीवाणु के हृदय में भी प्रविष्ट रहते हैं। अतः उन्हें **अणोरणीयांसम्** कहा गया है। इतने सूक्ष्य होने पर भी वे सर्वव्यापक एवं सर्वपालक हैं और सब लोकों को धारण करते हैं। हमें प्रायः आश्चर्य होता है कि ये बृहत्काय लोक अन्तरिक्ष में किस प्रकार स्थिर हैं। यहाँ उल्लेख है कि अपनी अचिन्त्य-शक्ति द्वारा श्रीभगवान् इन भीमकाय लोकों तथा नक्षत्रों को धारण कर रहे हैं। इस सन्दर्भ में **अचिन्त्य** शब्द महत्त्वपूर्ण है। हमारी धारणा तथा चिन्तन-परिधि से परे होने के कारण भगवत्-शक्ति को **अचिन्त्य** कहा जाता है। इस सन्दर्भ में कोई तर्क क्या करेगा ? प्राकृत-जगत् में व्याप्त होने पर भी प्रभु इससे सर्वथा परे हैं। हमारे लिए तो यह पूरा जगत् भी, जो भगवद्धाम् की तुलना में नगण्य है, बुद्धिगम्य नहीं; फिर इससे परे का तत्त्व क्योंकर तर्क का विषय होगा ? **अचिन्त्य** शब्द उस तत्त्व का वाचक है, जिसका हमारे तर्क, न्याय-युक्ति तथा दार्शनिक मनोधर्म आदि स्पर्श तक नहीं कर सकते। अतः सुधीजनों को चाहिए कि निरर्थक तर्क और मनोधर्मी करने के स्थान पर वेद, गीता, श्रीमद्भागवत, आदि शास्त्रों के कथन को प्रमाण मानकर उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों का अनुसरण करें। इस साधन से ज्ञानप्राप्ति हो जायगी।

प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।।१०।।

प्रयाण काले=अन्तकाल में; **मनसा**=मन से; **अचलेन**=स्थिर; **भक्त्या**=पूर्ण भक्तिभाव से; **युक्तः**=युक्त पुरुष; **योगबलेन**=योगाभ्यास के बल से; **च**=और; **एव**=निस्सन्देह; **भ्रुवोः**=दोनों भृकुटियों के; **मध्ये**=मध्य में; **प्राणम्**=प्राणवायु को; **आवेश्य**=स्थापित करके; **सम्यक्**=भलीभाँति; **सः**=वह; **तम्**=उस; **परम्**=परम; **पुरुषम्**=भगवान् को; **उपैति**=प्राप्त होता है; **दिव्यम्**=दिव्य भगवद्धाम में।

अनुवाद

जो पुरुष अन्तकाल में अपने प्राणों को भृकुटी के मध्य में स्थापित करके पूर्ण